©2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

महाभाष्यकार पतञ्जलि एवं मौनिश्रीकृष्णभट्ट की दृष्टि में द्रव्यमीमांसा

गोविन्द शुक्ल

शोधछात्र

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,

भोपाल परिसर, भोपाल (मध्यप्रदेश)

व्याकरण महाभाष्यकार भगवान् पतञ्जलि ने द्रव्य और गुण के विषय में दो प्रकार के सिद्धान्तों की चर्चा की है। उसमें से प्रथम पक्ष है – गुणों से या गुण समुदाय से पृथक् अन्य कोई पदार्थ द्रव्य है, क्योंकि द्रव्य गुण और क्रिया का आश्रय है और गुणक्रियादि समवायसम्बन्ध से द्रव्य में रहते हैं अतः द्रव्य गुण और क्रिया का समवायिकारण है। नैयायिक भी अवयव अवयवी का, गुण और गुणी का, क्रिया क्रियावान् का जाति और व्यक्ति का परस्पर समवाय सम्बन्ध स्वीकार करते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने 'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' में कहा है –

घटादीनां कपालादी द्रव्येषु गुणकर्मणोः।
तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः।।[1]

गुणक्रिया इत्यादि से अतिरिक्त द्रव्य की सत्ता है इसमें कणाद का वैशेषिक सूत्र भी प्रमाण है –**''क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्''**[2] क्रिया और गुण का जो समवायिकारण है वह द्रव्य है।दूसरा सिद्धान्त है – गुण गुणसमुदाय से अतिरिक्त पृथक् द्रव्य की सत्ता नहीं है। क्योंकि उनके मत में गुणसमूहात्मक ही द्रव्य है। गुण से अतिरिक्त द्रव्य का पृथक् प्रत्यक्ष नहीं होता अपितु गुणात्मक द्रव्य की प्रतीति होती है। जैसे – उपस्थित कमल के पुष्प के प्रत्यक्ष में जो उसमें सुरभि है वह गन्ध है। सप्तरूपों में से जो उसमें रक्त, पीत, शुक्ल इत्यादि है वह रस है, तद्गत जो मृदु है वह स्पर्श है। पुष्प के किञ्चित् अयवय को जिह्वा के अग्रभाग में रखकर चबाने से जो कुछ कषाय सा प्रतीत होता है वह रस है, पुष्प को अङ्गुलि से आघात करने पर जो चटचटात्मक ध्वनि है, वह शब्द है, इसके अतिरिक्त अन्यत् कुछ भी अनुभूत नहीं होता जिसे द्रव्य रूप में स्वीकार किया जाये। इसलिए रूपादि से अतिरिक्त कुछ भी प्रतीत नहीं होता, इस प्रकार रूपादि का ही हमें अनुभव होता है, अतः रूपादिगुणसमुदाय ही द्रव्य है।

''स्त्रियाम्'' इस सूत्र के भाष्य में भी शङ्का समाधानपूर्वक गुणसमुदाय ही द्रव्य है यह सिद्धान्त समुपस्थापित किया है – **द्रव्ये च भवतः कः सम्प्रत्ययः? गुणसमुदायो द्रव्यमिति।**[3]पतञ्जलि प्रणीत योगसूत्र के व्यास भाष्य में भी कहा गया है –

अयुतसिद्धावयवभेदानुगतः समुदायो द्रव्यमिति पतञ्जलिः[4]

अयुतसिद्ध अर्थात् जो अलग न होने वाले अवयवों का समुदाय द्रव्य है ऐसा पतञ्जलि को अभिप्रेत है। यहाँ पूर्व में गुण से व्यतिरिक्त द्रव्य की सत्ता है इस पर विचार करते हुए भगवान् भाष्यकार ने कहा है – **किं पुनर्द्रव्यम्? के पुनर्गुणाः? शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा गुणाः ततोऽन्यद् द्रव्यम्। किं पुनरन्यच्छब्दादिभ्यो द्रव्यम्? आहोस्विदनन्यत्? गुणस्यायं भावाद् द्रव्ये शब्दनिवेशं कुर्वन् ख्यापयति यदन्यच्छब्दादिभ्यो द्रव्यमिति।**[5]

यहाँ पर द्रव्य के विषय पर चर्चा करते हुए कहते हैं – द्रव्य क्या है, पुनः गुण कौन है। शब्दस्पर्शरूपरसगन्ध ये गुण हैं। इनसे अतिरिक्त द्रव्य है फिर विचार किया कि क्या शब्दादि से अन्य द्रव्य है या फिर शब्द ही द्रव्य है। शब्द से अन्य द्रव्य की सत्ता है इस प्रकार भाष्यकार के प्रथम पक्ष में द्रव्य को गुण से पृथक् पदार्थ के रूप में व्यवस्थापित किया।गुण समुदाय ही द्रव्य है ऐसा स्वीकार करने वालों के प्रति महाभाष्यकार कहते हैं –**अनन्यच्छब्दादिभ्यो द्रव्यम्, न हि अन्यदुपलभ्यते। पशोः खल्वपि विशसितस्य पर्णशते न्यस्तस्य नान्यच्छब्दादिभ्य उपलभ्यते।**[6]

इस प्रकार रूपादिव्यतिरिक्त द्रव्य का प्रत्यक्ष न होने से द्रव्य गुण से अतिरिक्त वस्तु नहीं है। इसलिए लाघवात् गुणसमुदाय को ही द्रव्य स्वीकार करना चाहिए। अतिरिक्त द्रव्य की कल्पना करना पुनः उसके नाश की कल्पना की अपेक्षा रूपादिगुणसमुदाय ही द्रव्य है, उससे अतिरिक्त द्रव्य नहीं है।इस प्रकार गुण से अतिरिक्त द्रव्य को पदार्थ मानने वाले कहते हैं – शब्दादि से अन्य द्रव्य है। यह अनुमान प्रमाण से सिद्ध है। जैसे – ओषधि वनस्पतियों का वृद्धि दोनों ओर ह्रास होना। नक्षत्रों की गति की तरह। इसमें क्या अनुमान है इस पर कहते हैं समान माप वाले तुला और लौह इन दोनों में से लौह तुला की अपेक्षा गुरुत्व अधिक होता है इस प्रकार कपास का तुलाग्र भिन्न होगा और लौह का तुलाग्र भिन्न होगा। इस प्रकार दोनों के तुलाग्र का न्यूनाधिक्य का ज्ञान जिससे होता है वह गुण से भिन्न द्रव्य है इस प्रकार गुण से पृथक् द्रव्य की सिद्धि होती है। इसी प्रकार कोई कार्पासादि लम्बमान होने पर भी नष्ट नहीं होता कोई खड्गादि के स्पर्शमात्र से नष्ट हो जाता है इसमें जो विशेष है वह द्रव्य है। इस प्रकार भाष्य में प्रतिपादित है – **इह समाने वर्ष्मणि परिणाहे चाऽन्यत्तुलाग्रं भवति लोहस्यान्यत्कार्पासानाम्। यत्कृतो विशेषस्तद्द्रव्यम् (म.भा. 512/11)**[7]

इसकी व्याख्या करते हुए कैयट ने महाभाष्य प्रदीप में कहा – **गुरुत्वस्य समवायिकारणं द्रव्यमिति रूपादिव्यतिरिक्तद्रव्यसिद्धिः**[8] गुरुत्व का जो समवायिकारण द्रव्य है और वह रूपादि से पृथक् है।अनन्त गुण से अतिरिक्त द्रव्य की सिद्धि में भाष्यकार द्वितीय प्रमाण प्रस्तुत करते हैं – जिसके गुण में परिवर्तन हो जाने पर भी जो नष्ट नहीं होता वह द्रव्य है। आमलका और बदर इत्यादि फलों में तेज के सन्निकर्ष के कारण रक्तादि पीतादि गुण प्रादुर्भूत होते हैं, इस प्रकार प्रथमगुण के नष्ट होने पर ही द्वितीय गुण उत्पन्न होता है परन्तु उन गुण के परिणत होने पर भी जो विद्यमान रहता है वह द्रव्य है। अमलक बदर आदि में रूपादि के प्रादुर्भाव एवं विनाश होने पर भी यह वही आमलक है। इस प्रकार का जो ज्ञान बुद्धि में उपस्थित होता है जिस कारण बुद्धि बदरआमलकादि पदार्थ का त्याग नहीं करती वहीं बदरआमलकादि गुण से बहिर्भूत ही द्रव्य है न कि गुणसमुदायरूप, गुणसमुदाय को द्रव्य स्वीकार करने पर विलक्षण तेज के सन्निधान से उस द्रव्य के नाश हो जाने पर यह वही है इस प्रकार की प्रत्यभिज्ञा नहीं होगी परन्तु यह वही है इस प्रकार का ज्ञान रहता है अतः गुणसमुदाय को द्रव्य नहीं स्वीकार किया जा सकता।

यस्य गुणान्तरेष्वपि प्रादुर्भवत्सु तत्त्वं न विहन्यते तद् द्रव्यम्, तद्यथा – बदरामलकादीनां फलानां रक्तादयः पीतादयश्च गुणाः प्रादुर्भवन्ति, आमलकं बदरमित्येव भवति (म.भाष्य 5/1/119)[9]

द्रव्यशब्द का निर्वचन करते हुए कहते हैं – **''गुणसंद्रावो द्रव्यम्''**[10] यह निर्वचन द्रव्य के अन्वर्थ अर्थ को परिलक्षित करता है। **संदूयते संगम्यते आश्रीयते इति द्रव्यम्। गुणानां संद्रावः गुणानामाश्रयः।**[11] इस प्रकार भाष्यसन्दर्भ से द्रव्य गुणसमुदाय से अतिरिक्त एवं पृथक् है यह सिद्ध होता है।किन्तु यह व्याकरणशास्त्र सर्ववेदपारिषद है। इस प्रकार इस शास्त्र में अनेक मार्गों का उपस्थापन सम्भव है। **''सर्ववेदपारिषदं हीदं शास्त्रम्। तत्र नेकः पन्थाः शक्यन्ते आस्थातुम्''**[12] इस न्याय के अनुसार भाष्यकार ने गुणसमुदाय ही द्रव्य है यह पक्षान्तर भी स्वीकार किया है। अत एव संख्याया अवयवे तयप् (पा.सू. 5/2/442) इस सूत्र के भाष्य में स्पष्ट है कि समुदाय के अवयव गुण होते हैं न कि अवयवी, यह सिद्धान्त पतञ्जलि ने स्थापित करते हुए कहा है – **कञ्च प्रत्यवयवो गुणः? समुदायम्** (म.भा.5/2/42)। यहाँ पर गुण अप्रधान है न कि शब्दस्पर्शादि, इस प्रकार अवयवों का समुदाय द्रव्य है यह द्योतित होता है। इस मत को विस्तृत करते हुए कैयट ने **'गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः'** (5/4/135) के भाष्य में कहा है – **रूपादिसमुदायात्मकस्य द्रव्यस्य गन्धलक्षणो गुण एकान्तो भवति।**[13] यहाँ पर एकान्त का अर्थ अवयव या एकदेश है।[14]

इस प्रकार 'गुणाश्रय द्रव्य है अथवा गुणसमुदाय द्रव्य है' इन दोनों प्रकार के द्रव्य को स्वीकार करने पर भी व्याकरण शास्त्र की समस्याओं का समाधान असम्भव है क्योंकि व्याकरण में 'कृत् प्रत्यय के द्वारा अभिहित जो भाव है वह द्रव्य की तरह प्रकाशित होता है।'[15] जिस प्रकार घटः के उच्चारण से लिङ्ग संख्या आदि की उपस्थिति होती है उसी प्रकार कृदन्त 'पाकः' से भी लिङ्गसंख्या विशिष्ट अर्थ उपस्थित होता है। इस प्रकार जो द्रव्य है वह लिङ्ग संख्या से युक्त है, अतएव व्याकरण शास्त्र में द्रव्य के पारिभाषिक स्वरूप को स्वीकार किया गया है, जिसे वे सांव्यवहारिक द्रव्य कहते हैं। उसे परिभाषित करते हुए आचार्य भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में कहा है –

वस्तूपलक्षणं यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते।
द्रव्यमित्युच्यते सोऽर्थभेदेन भिद्यते।[16]

आचार्य मौनिश्रीकृष्णभट्ट भी वैय्याकरण सम्मत परिभाषिक द्रव्य को स्वीकार किया है शब्दार्थतर्कामृतम् में मौनिश्रीकृष्णभट्ट वाक्यपदीय में प्रतिपादित – **वस्तूपलक्षणं यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते, द्रव्यमित्युच्यते सोऽर्थो भेद्यत्वेनः विवक्षितम्'** यह एवं भाष्योक्त **''लिङ्गसङ्ख्यान्वितं द्रव्यम्''** ये द्रव्यलक्षण स्वीकार किया हैं। इस प्रकार का द्रव्यत्व धात्वर्थ एवं अव्ययार्थ से अतिरिक्त सप्तपदार्थ में घटित होता है।[17]

आचार्य मौनिश्रीकृष्ण भट्ट पदार्थ को द्रव्य अद्रव्य भेद से दो प्रकार स्वीकार करते हैं।[18] एवं तार्किकों के द्वारा विभाषित द्रव्य के सप्तभेद को घटपटादि उपाधि भेद की तरह निरर्थक माना है।[19]द्रव्य भी दो प्रकार का है – वस्तुद्रव्य एवं अवस्तु द्रव्य। वस्तु द्रव्य भी दो प्रकार का है – नित्य वस्तुद्रव्य, अनित्यवस्तुद्रव्य। नित्यवस्तुद्रव्य आत्मा है। तदतिरिक्त पृथिवी, जल, तेज, वायु तथा आकाश। **तत्र वस्तुपदार्थो द्विविधः नित्योऽनित्यश्च। नित्य आत्मा तद्भिन्नपृथिव्याद्यनित्यः इति शाब्दिकाः।**[20]इस प्रकार मौनिश्रीकृष्णभट्ट के अनुसार द्रव्य के नव भेद न होकर छः भेद ही है। मौनिश्रीकृष्णभट्ट ने पृथिवी, जल, तेज तथा वायु आकाश को नित्य नहीं माना है इसमें श्रुति को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है, **एतस्माद् आत्मनः आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथ्वी।**[21]

इस का अर्थ है – इस ब्रह्म (शब्द ब्रह्म) से आकाश की उत्पत्ति होती है, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार उत्पन्न होने के कारण ये पदार्थ अनित्य हैं क्योंकि उत्पत्ति विनाश से जो रहित होता है उसे नित्य कहते हैं।

सन्दर्भ–

1. विश्वनाथपञ्चानन प्रणीत, न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, पं. ढुण्ढिराजशास्त्रिसम्पादितः विद्याविलासप्रेस, वाराणसी, प्रत्यक्षखण्ड, कारिका सं. 11।
2. वैशेषिक दर्शन, पं. राजाराम (प्रो. डी.ए.वी. कालेज लाहौर), बाम्बे मशीन प्रेस, लाहौर, 1919, पृ.सं. 24।
3. व्याकरण म.भाष्य, पृ. 342
4. योगसूत्र, न्यायभाष्य – नारायण मिश्र सम्पादित, भारतीय विद्याप्रकाशन वाराणसी, 1971, पृ. 365
5. वै.म.भाष्य, पृ. 342
6. वै.म.भाष्य, सूत्र 5/1/119, पृ. 343
7. वै.म.भा. पृ. 344
8. वै.म.भा., प्रदीप 5/1/112
9. वै.म.भाष्य, पृ. 345
10. वै.म.भाष्य, सूत्र 5/1/119, पृ. 345
11. महाभाष्यकार पतञ्जलिमते द्रव्यगुणयोर्विवेचनम् – डॉ. भीमसिंहो वेदालङ्कारः, सरस्वती सुषमा, ज्ये. भा. पू. 2040 वि.
12. वै.म.भाष्य, सूत्र 2/1/58
13. वै.म.भाष्य सूत्र 5/4/135, प्रदीप, पृ. 509
14. द्र. – एकान्ताः अनुबन्धाः, अनेकान्ता अनुबन्धा, परिभाषेन्दु शेखर, परिभाषा 5,6।
15. कृदभिहितो भावो द्रव्यवद् भवति। म.भा. 4/1/3
16. वाक्यपदीयम् 3/4/3
17. भाष्योक्तं लिङ्गसंख्यान्वितं द्रव्यम् 'इति वा द्रव्यलक्षणमित्येव तत्त्वम्। तच्च धात्वर्थाव्ययार्थव्यतिरिक्त सप्तपदार्थ साधारणम्, श. तर्का. 5–2, पृ. 14
18. तथा च द्रव्याद्रव्यभेदेन द्विविधः पदार्थ इति शाब्दिकसिद्धान्तः। शब्दार्थतर्कामृतम् 4–2, पृ. 14
19. अन्येषां तार्किकोक्तविभाषकोपाधीनां घटादिविभापकोपाधिवनदावश्यकत्वात्। शब्दार्थतर्कामृतम् 5–2, पृ. 14
20. शब्दार्थतर्कामृतम् 14–2, पृ. 47
21. तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मानन्दवल्ली

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. व्याकरणमहाभाष्य, महामहोपाध्याय श्रीनागोजिभट्टविरचित महाभाष्यप्रदीपोद्योतोद्भासितेन महामहोपाध्याय श्रीकैयटोपाध्यायविरचितेन प्रदीपेन विराजितम्, श्रीगुरुप्रसादशास्त्री, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
2. वैशेषिकदर्शन, पं. राजाराम (प्रोफेसर डी.ए.वी. कालेज, लाहौर), बाम्बे मशीन प्रेस लाहौर, मे. पं. हर भगवान् मैनेजर के प्रबन्ध से छपवाया, सन् 1919 ई.।
3. पाणिनीयव्याकरणे प्रमाणसमीक्षा, आचार्य श्रीरामप्रसाद त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी।

4. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्य पं. ढुण्ढिराजशास्त्रिसम्पादिता, विद्याविलासप्रेस, वाराणसी, 1925
5. योगसूत्र, व्यासभाष्य नारायण मिश्र सम्पादित, भारतीय विद्याप्रकाशन, वाराणसी, 1971
6. शब्दार्थतर्कामृतम्, मौनिश्रीकृष्णभट्टविरचित, सं. ललितकुमारत्रिपाठी, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, गङ्गानाथझापरिसर, प्रयाग
7. पाणिनीयव्याकरणशास्त्रे वैशेषिक तत्त्वमीमांसा, डॉ. रामशरण शास्त्री, वैद्य भीमसेन शास्त्री, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली।
8. व्याकरणस्य दर्शनत्वम्, डॉ. महेन्द्र शुक्ल, MPASVO] M- Publication
9. शब्दार्थतर्कामृतम् में आलोचित न्यायवैशेषिक दर्शन की पदार्थमीमांसा : एक अनुशीलन Journal of The Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha] Allahabad - 2010
10. वाक्यपदीयम्, वाक्यकाण्ड, भर्तृहरि, पुण्यराजकृत टीका एवं रघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्रीव्याख्या सहित, सरस्वतीभवनग्रन्थमाला 91 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, संस्करण द्वितीय, 1980
11. व्याकरणदर्शन भूमिका, रामाज्ञा पाण्डेय, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीयसंस्करण, 1981
12. व्याकरणदर्शनपीठिका, रामाज्ञा पाण्डेय, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीयसंस्करण, 1986
13. अष्टाध्यायी पाणिनि, सम्पादक – श्री गोपालदत्तपाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2009
14. वाक्यपदीयम्, ब्रह्मकाण्डम्, भर्तृहरि, हरिवृषभकृत स्वोपज्ञवृत्ति एवं पद्मश्री पण्डित रघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्रीव्याख्या सहित, सरस्वतीभवनग्रन्थमाला 91 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, संस्करण तृतीय, 1980
15. वाक्यपदीयम्, पदकाण्ड, भर्तृहरि, जातिद्रव्यसम्बनसमुद्देशत्रयात्मक हेलाराजविरचित प्रकाश व्याख्या एवं पद्मश्रीपण्डितरघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्रीव्याख्या सहित, सरस्वतीभवनग्रन्थमाला 91 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, 1980
16. वाक्यपदीयम्, पदकाण्ड, भर्तृहरि, द्वितीयभाग भूयोद्रव्यगुणदिक्साधनक्रियाकालपुरुषसंख्या उपग्रहलिङ्गसमुद्देशत्रयात्मक हेलाराजविरचित प्रकाश व्याख्या एवं पद्मश्रीपण्डितरघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्रीव्याख्या सहित, सरस्वतीभवनग्रन्थमाला 91 सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, 1991
17. वाक्यपदीयम्, पदकाण्ड, भर्तृहरि, वृत्तिसमुद्देश हेलाराजविरचित प्रकाश व्याख्या एवं रघुनाथशर्मा कृत अम्बाकर्त्रीव्याख्या सहित, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी, 1977

———0———